ISSN:2583-8849



के. पी. अनमोल
सांचोर, राजस्थान
वर्तमान पता-रुड़की, उत्तराखण्ड

1

फ़लक, ज़मीन, सितारे तेरे बनाए हुए
सभी हसीन नज़ारे तेरे बनाए हुए

तेरे बनाए हुए कश्तियाँ, नदी, मल्लाह
हवा के ज़ोर, किनारे तेरे बनाए हुए

निकलना चाँद का, सूरज का, रात-दिन होना
अजीब-अजीब इशारे तेरे बनाए हुए

किसी का चेहरा नहीं मिलता एक-दूजे से
मज़े की बात कि सारे तेरे बनाए हुए

तेरे बनाए हुए जंगलों के दुश्मन हैं
तेरी कुल्हाड़ियाँ, आरे तेरे बनाए हुए

तलाश ही में तेरी जाने कितने जन्मों से
भटक रहे हैं बिचारे तेरे बनाए हुए

करेंगे ज़िक्र तेरी रहमतों का हम 'अनमोल'
मिलेंगे हमको सहारे तेरे बनाए हुए

2

हर सोच, हर सवाल से आगे की बात है
दुनिया मेरे ख़याल से आगे की बात है

जब जी चुके, तो जाके यही राय बन सकी
जीना किसी कमाल से आगे की बात है

हमने जिसे हज़ार मिसालों में रख दिया
वो ज़ात, हर मिसाल से आगे की बात है

ऐसे अँधेरे दौर पे लिख देना रोशनी
सचमुच किसी मशाल से आगे की बात है

पंछी बहुत मलाल में गाता है इन दिनों
पिंजरा किसी भी जाल से आगे की बात है

हम जो ज़मीं का हाल नहीं पूछते कभी
बस ये ही इस्तेमाल से आगे की बात है

साँसों की लय पे गाना किसी एक ही का नाम
हर धुन, हर एक ताल से आगे की बात है

डरने लगे हैं लोग सियासत के नाम से
जैसे ये हर बवाल से आगे की बात है

वे मानते थे चाँद-सितारों को तोड़ना
'अनमोल' की मजाल से आगे की बात है

ISSN:2583-8849

3

ये और बात है कि तुमको कैसा लगता है
हमें तो जो भी मिला है वो अच्छा लगता है

दो-एक रोज़ से ये जेबें थोड़ी भारी हैं
तमाम शहर इन्हें हल्का-हल्का लगता है

बड़े घरों में चमकते हैं काँच और पत्थर
ग़रीब तन पे तो सोना भी खोटा लगता है

लिबास देख के ही पेश आती है दुनिया
पतंग जैसा हो, वैसा ही माँझा लगता है

जहाज डूब गये एक छेद होते ही
ज़रा-सी बात पे ही कितना सदमा लगता है!

जिसे हों जानते, पहचान नहीं पाते हम
बिना मिले ही कोई देखा-देखा लगता है

उम्मीद भारी हो 'अनमोल' जब मुनाफ़े की
तो बोझ पीठ पे जितना हो, थोड़ा लगता है

4

पसीने छूटते हैं, जान लगा करती है
कमाई क्या तुम्हें आसान लगा करती है!

किसी के वास्ते आफ़त की तरह है ये जंग
तुम्हें जो खेल का सामान लगा करती है

हर एक चीज़ भली लगती है जो हद में हो
हवा जो तेज़ हो, तूफ़ान लगा करती है

मैं देर करता नहीं हाथ पीछे करने में
कोई मदद अगर एहसान लगा करती है

तमाम ख़ुशबुओं में सिर्फ उसकी ख़ुशबू ही
हमारी साँसों को लोबान लगा करती है

सजा के ख़्वाब ही रक्खेंगे रात की रौनक
बाज़ार में ही तो दूकान लगा करती है

शरारतें जो उतर आएँ आँख के भीतर
तो प्यारी शक्ल भी शैतान लगा करती है

बस एक उसके परेशान होने भर से ही
मुझे ये दुनिया परेशान लगा करती है

किसी का दिन जो बनाना हो तो उन्हें 'अनमोल'
बस एक प्यारी-सी मुस्कान लगा करती है

ISSN:2583-8849

5

कई हसीन-से ख़्वाबों को भंग होते हुए
मैं देखता हूँ यहाँ रोज़ जंग होते हुए

तेरी बनाई हुई कायनात है बे-रंग
तेरी बनाई निगाहों में रंग होते हुए

वो एक नाव है दरिया पे मौज भरती हुई
मै ख़ुद को देखता हूँ जलतरंग होते हुए

हमारी छोड़िए कि हम तो दुनियादार हैं पर
जहां का मोह तुम्हें है मलंग होते हुए

किसी भी तौर नहीं लगते हम ज़माने के
ज़माने वाले सभी रंग-ढंग होते हुए

तुम्हारे मन में जो अनबन की एक खाई है
उसे मैं देख रहा हूँ सुरंग होते हुए

उसी की हसरतों के आसमान में 'अनमोल'
उड़ानें भर रहा है मन पतंग होते हुए

6

हवाओं, पंछियों के साथ-संग कैसे उड़े
नहीं था आपको चलने का ढंग, कैसे उड़े!

हमें ख़बर है कहाँ क्या बदलता रहता है
बताएँ आपके चेहरों के रंग कैसे उड़े?

उड़ान भर रहे हैं आसमान में इंसान
परिंदे सोच के होते हैं दंग, कैसे उड़े!

बसा हुआ है ख़ुदा सात आसमानों पर
ज़मीं से सोच रहा है मलंग, कैसे उड़े!

बग़ैर देखे उसे कैसे कोई मुस्काए
हवा ज़रा भी नहीं है, पतंग कैसे उड़े

दिखे हैं भोर तलक ख़्वाब आसमानों के
कि नींद जानती है अंग-अंग कैसे उड़े

पुकारता है उसे आसमान पर 'अनमोल'
ज़रा भी मन में नहीं है उमंग, कैसे उड़े!